ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)30-36
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

सुप्रिया सिंह

शोधार्थी (हिन्दी विभाग),

जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

Corresponding Author :

सुप्रिया सिंह

शोधार्थी (हिन्दी विभाग),

जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

डॉ. उषाकिरण खानः व्यक्तित्व, कृतित्व एवं रचनात्मक अवदान

शोध सार:- हमारा समाज हमारे आस-पास के समाजिक परिवेष से ही मिलकर बनता है तथा इसी समाजिक परिवेष से ही किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। डॉ. उषाकिरण खान का व्यक्तित्व बचपन से ही निखरा हुआ था, क्योंकि उनके घर में पहले से ही साहित्यिक महौल बना हुआ था। उनके घर पर अक्सर साहित्यकारों, क्रांतिकारियों का आना-जाना लगा रहता था। उषा जी के पति घोर गाँधीवादी स्वतंत्रता सेनानी क्रांतिकारी थे। जिसका असर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों पर पड़ा। यही कारण है कि उन्होंने अपने जीवन में इतनी बड़ी उपलब्धि प्राप्त की। उनके व्यक्तित्व में और अधिक निखार लाने का कार्य तथा प्रेरणा स्त्रोत के रूप में कुछ मुख्य व्यक्तियों का स्थान है जैसे:- बाबा नागार्जुन, मायानन्द मिश्र, रेणू जी, अज्ञेय, दिनकर इत्यादि। बचपन से ही इनके घर पर साहित्यकारों की मंडली लगी रहती थी। जिसका काफी प्रभाव इनके मनोभाव पर हुआ। किसी भी लेखक के व्यक्तित्व के अन्तर्गत उसके जन्म एवं बचपन, पारिवारिक परिवेष, षिक्षा-दीक्षा, अभिरूचि, व्यवसाय, आत्मीय संबंध, प्रेरणा स्त्रोत, विदेष यात्रा, सम्मान, पुरस्कार आदि बहुत सारी बातें आती हैं।

उषा जी ने अपने कृतित्व में मुख्य रूप से नारी मन की व्यथा की समस्या, मध्यवर्गीय समाज में नारी की समस्याएँ, ग्रामीण जीवन की नारी की समस्याएँ, पंचायती राज में महिलाओं का स्थान, अपने हक की लड़ाई, संघर्ष, स्त्री-पुरूष के बनते बिगड़ते संबंधों की समस्याएँ आदि को उठाया है। इन्हीं कारणों से लेखिका काफी विख्यात हुई तथा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित भी हुई थीं। इनकी रचनाओं में लोकसंस्कृति, लोकजीवन, लोकगीत का भी पूर्ण रूप से वर्णन मिलता है। यही कारण है कि इनके पात्र हमें बिहार के किसी भी गाँव में देखने से मिल जाते हैं, क्योंकि ये ग्रामीण परिवेष से जुड़ी हुई हैं। वस्तुतः किसी भी लेखक के व्यक्तित्व और कृतित्व का गहरा संबंध होता है उसकी रचनाओं से।

बीज शब्द:- नीरा-मन, समाज, लोकसंस्कृति, पारिवारिक-परिवेष, प्रेरणा-स्त्रोत, स्वतंत्र व्यक्तित्व।

प्रस्तावना:- लेखक सिर्फ एक लेखक ही नहीं होता है बल्कि वह समाज को रास्ता दिखाने वाला मार्गदर्षक भी होता है। डॉ. उषाकिरण खान न सिर्फ एक लेखिका है बल्कि वे समाज के उन मध्यवर्गीय ग्रामीण महिलाओं कि शक्ति का आधार के रूप में समाज के सामने उनके समस्याओं को लेकर आई हैं। इन्होंने वैयक्तिक अनुभूतियों का समाजिक अनुभूतियों में रूपान्तरण किया है। उषाकिरण खान जी महादेवी वर्मा के बाद पहली महिला हैं जिनको भारत भारती सम्मान से नवाजा गया है। इसलिए वह अपना परिचय महादेवी वर्मा की इन पंक्तियों से देती हैं –

''परिचय इतना इतिहास यही, उमड़ी कल थी वह आज चली''।

लेखिका ने मुख्य रूप से नारी विषय को अपनी रचनाओं में उठाया है। इनकी रचनाओं में ग्रामीण नारियाँ भी अपनी हक की जमीन की तलाष करती हुई पगडंडीओं से गुजरती हुई चौड़ी सड़क तक आई हैं। पंचायती राज के ताने-बाने सहती हुई आज तैंतीस प्रतिशत की हकदार भी बन बैठी हैं। लेखिका का मूल स्वर हैः- नारी अभिव्यक्ति, नारी रक्षा, नारी सशक्तिकरण, नारी सम्मान आदि।

डॉ. उषाकिरण खानः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्यक्तित्व:- किसी भी लेखक या लेखिका का व्यक्तित्व उसके आस-पास के परिवेष तथा साहित्यिक परिवेष, रचनाओं से काफी प्रभावित होता है। व्यक्तित्व का निर्माण ही उसके आस-पड़ोस के सामाजिक परिवेष, राजनीतिक परिवेष तथा धार्मिक परिवेष तीनों के मेल से निर्मित होता है। हर व्यक्ति के जीवन में बहुत सारी घटनाएँ घटित होती है। जिसका असर उसके साहित्य सृजन पर पड़ता है। इसके लिए व्यक्ति के जन्म एवं बचपन, पारिवारिक परिवेष, षिक्षा-दीक्षा, अभिरूचि, माता-पिता, आत्मीय संबंध, व्यवसाय, साहित्य-सृजन की प्रेरणा एवं शुभारंभ सम्मान-पुरस्कार आदि सभी का उसके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होती है। अंतः डॉ0 उषा जी के समग्र व्यक्तित्व की जानकारी आगे प्रस्तुत है।

डॉ. उषाकिरण खान हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ महिला कथाकारों में से एक हैं। जिनका जन्म 24 अक्टूबर 1945 ई0 को लहेरियासराय, दरभंगा जिले में हुआ। इनके पिता जी का नाम जगदीष चौधरी तथा माता जी शकुंतला देवी थीं। इनके माता-पिता पूर्ण रूप से गाँधीवादी स्वतंत्रता सेनानी क्रांतिकारी थे। उषा जी के बचपन का नाम मिनी था तथा इनका मूल नाम किरण था। किरण के आगे उषा नाम इसके बालसखा पति स्व. रामचन्द्र खान जी द्वारा दिया गया था। उषा जी का बचपन मिथिला के पकरिया नामक गाँव में बिता था। ये कोसी क्षेत्र में आते है। उषा जी के जहन में गाँव के मिट्टी की महक के साथ ही साथ कोसी नदी के पानी जैसा- तेज बहाव विद्वमान है। जो उषा जी को बचपन से ही साहसी, निडर एवं हिम्मती बनाता है।

उषा जी के माता-पिता घोर गाँधीवादी क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी थे। जिसके कारण उस समय गाँधी जी ने समाज को एक समान देखने की जागरूकता सभी के दिल में जगाई। हिन्दू समाज में सभी बराबर थे। इस कारण द्विजों को जनेऊ तोड़ देना चाहिए। मानव धर्म एक है सो षिखा रखने का औचित्य नहीं है। अस्पृश्य कोई नहीं है। इस कारण का संकल्प जगदीष ने भी लिया, जनेऊ तोड़ डाले, षिखा कार ली। अस्पृश्य लोगों के हाथ का पानी पीते रहे। उषा जी के पिता जगदीष चौधरी ने एक बाल विधवा कन्या शकुंतला देवी से विवाह कर उस समय अपने जात-भाईयों के सामने एक विद्रोह तथा बाल विधवा विवाह को सामने लाए, जिसके कारण उषा जी के परिवार वालों को बहुत बड़ी समाजिक संकटों का सामना करना पड़ा। उषा जी का पारिवारिक परिवेष चाहे वह मायका हो या फिर ससुराल दोनों ही अच्छा रहा क्योंकि दोनों ही परिवार षिक्षित थे। पति तो बाल सखा ही थे जिसके कारण दोनों का दाम्पत्य जीवन काफी अच्छा रहा। चार संतानों एक पुत्र तथा तीन पुत्री से भरा-पूरा इनका परिवार है। माता-पिता, सास-ससुर तथा पति के अलावा अन्य परिवार के सदस्यों का काफी सहयोग मिला। जिसके कारण आज भी इन्हें एक प्रतिष्ठ परिवार के रूप में जाना जाता है।

उषा जी की प्रारंभिक षिक्षा दरभंगा के एल.आर. गर्ल्स स्कूल में हुआ। आगे की पढ़ाई पटना में हॉस्टल में रहकर ऐंग्स गर्ल्स स्कूल में हुई। मैट्रिक की परीक्ष के बाद इनका विवाह आई.ए.में पढ़ने वाले तीक्ष्ण बुद्धि के युवक रामचन्द्र खान जी से हुई। विवाह के बाद दोनों पटना के अलग-अलग हॉस्टल में रहकर अपनी-अपनी पढ़ाई पूरा किए। इन्टर इन्होंने मगध महिला कॉलेज से पटना से किया। उसके बाद बी.ए. पटना कॉलेज से पास होने के बाद उषा जी ने एम.ए प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व में किया। इनका विशेष पत्र आर्ट एंड आर्किटेक्चर था। इसके बाद उषाजी ने अपने गुरू डॉ. उपेन्द्र ठाकुर के कहने पर पी.एच.डी. कर अपनी माता जी शकुंतला देवी का सपना पूरा किया।

उषा जी का बचपन से ही रूझान साहित्य की ओर था तथा इन्होंने विपुल साहित्य, संस्कृत, पालि, अंग्रजी तथा हिन्दी में प्राचीन से लेकर आधुनिक तक की पढ़ाई की। चूँकि उनकी अभिरूचि बढ़ने का कारण उनके घर-परिवार का षिक्षित होना एवं घर में साहित्यिक महौल आदि के कारण था। बचपन से ही इनकी रूचि नृत्य, संगीत, नाटक, लोक-गीत, कथा-कहानियाँ, सामा-चकेबा, मथिला के रीति-रिवाज मधुबनी पेंटिंग के साथ ही साथ वनस्पतियों, पर्यटन, देषाटन आदि में खूब रही है। साहित्यिक रूचि होने के कारण अनेक साहित्यकारों को पढ़ना-लिखना तथा इनके अतिरिक्त विशेष रूप से नारी-मुक्ति, नारी समस्या आदि संबंधी रचनाओं को पढ़ना तथा लिखना अधिक पंसद लेखिका को था।

डॉ. उषाकिरण खान का मूल व्यवसाय लेखन कार्य है। ये पहली ग्रामीण कथाकार हैं जिन्होंने अपने व्यवसाय में भी मूल रूप से महिलाओं के प्रगति के लिए कार्य किए। उषा जी सामाजिक क्रियाकलापों में बेहद सक्रिय रहीं। ये अवकाष प्राप्त शिक्षाविद् रहीं।

1980 में बी.डी. इवनिंग कॉलेज में कार्य किया। 21 जुलाई 2016 को इन्होंने ''आयाम'' नामक संस्था की स्थापना किया। जो साहित्य का स्त्री स्वर है। महिला चरखा समिति की सदस्य भी रही साथ ही किलकारी नामक बाल विद्यालय की सदस्य भी रही थीं। दूरदर्षन की इंडियन क्लासिक श्रृंखला बिहार की सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्न, बिहार सहित्योत्सव की सदस्य, भारतीय कविता समारोह की सदस्य तथा अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों की सलाहकार रही थीं।

आत्मीय संबंधों का यथार्थ के रूप में तो सबसे पहले लेखिका की माता जी का स्थान आता है। क्योंकि वे ही उन्हें हर कदम पर प्रोत्साहित करती रही। इसके बाद आत्मीय संबंधों के वाहक के रूप में इनके बाल-सखा पति। जिन्होंने जीवनसाथी होने के साथ ही साथ एक अच्छे आत्मीय मित्र, मार्गदर्षक का फर्ज बखूबी निभाया। उसके बाद इनकी सासु माँ जिन्हें उषा जी चाची कहती जिसके साथ इनका बहुत ही अतंरंग संबंध था। जिनका साथ 1995 तक ही रहा। लेखिका के आत्मीय संबंध के रूप में बाबा नागार्जुन, मायानंद मिश्र आदि आते हैं।

डॉ. उषाकिरण खान हिन्दी और मैथिली दोनों ही भाषाओं की लेखिका रहीं हैं। इनके जीवन में प्रेरणा स्त्रोत के रूप में सर्वप्रथम स्थान बाबा नागार्जुन का हैं। जिन्हें वे अपने पिता समतुल्य मानती थीं। इनके बाद मायानन्द मिश्र, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, गंगा शरण सिंह, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, कमलेष्वर, शमषेर बहादुर सिंह, राजेन्द्र यादव आदि जिनका सान्ध्यि मिलता रहा। पटना कॉलेज के प्रतिष्ठि गुरू उपेन्द्र ठाकुर जी का विशेष सान्ध्यि एवं प्रेरणा प्राप्त हुआ। सहित्य सृजन का कार्य उषा जी ने बाबा नागार्जुन के कहने पर किया उन्होंने कहा- ''लिखना मानो लिखना'' तभी उषा जी ने गाँठ बाँध ली और साहित्य सृजन का शुभारंभ हुआ।

उषा जी ने स्वदेष यात्राएँ के साथ ही साथ विदेष यात्राएँ भी की हैं। इनकी पहली विदेष यात्रा विष्व भोजपुरी सम्मेलन सेतु न्यास की ओर से मॉरीषन में हुई। जिसमें मालिनी अवस्थी, यतीन्द्र मिश्र, शारदा सिन्हा आदि लोग भी आये थे। उषा जी की दूसरी विदेष यात्रा विष्व हिन्दी सम्मेलन की हुई। यह यात्रा सूरीनाम की थी। जिसमें त्रिनिडाड की लेखिकाएँ व लेखक आये थे। न्यूयार्क के विष्व हिन्दी सम्मेलन में उषा जी के साथ बिहार से चार स्त्रियाँ- प्रो. वीणा श्रीवास्तव, सुखदा पाण्डेय, किरण घई तथा उषा जी 2007 में गई थीं। किसी भी लेखक के जीवन में साहित्यिक उपलब्धियों को प्राप्त करना उसके जीवन में बहुत प्रतिष्ठा की बात होती है। डॉ0 उषा किरण खान को अपने साहित्यिक लेखन कार्य के लिए समय-समय पर कई तरह के सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। जिनका विवरण इस प्रकार से है –

1. 1982 में हिन्दी –कविरमण पुरस्कार।
2. 1993 में हिन्दी सेवी सम्मान (राजभाषा विभाग, बिहार सरकार)।
3. 1998 में दिनकर राष्ट्रीय पुरस्कार।
4. 2000 में महादेवी वर्मा सम्मान (राजभाषा विभाग, बिहार)
5. 2011 में साहित्य अकादमी अवार्ड उपन्यास भामती।
6. 2012 में कुसुमांजली साहित्य उपन्यास (सिरजनहार)
7. 2013 में स्पंदन पुरस्कार –भोपाल।
8. 2015 में श्री बृजकिषोर प्रसाद पुरस्कार।
9. 2015 में साहित्य और षिक्षा के लिए पद्मश्री सम्मान।
10. 2016 में पं0 विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार।
11. 2016 में गाथांतर सम्मान।
12. 2017 में शरच्चंद्र सम्मान।
13. 2018 में उत्तर प्रदेष का सौहार्द पुरस्कार।
14. 2018 में भूपेन्द्र देव कोषी पुरस्कार।
15. 2019 में भारत-भारती पुरस्कार
16. 2020 में प्रबोध साहित्य सम्मान (आजीवन योगदान)
17. 2020 में प्रस्तावित-ढींगरा फांउडेषन पुरस्कार।
18. 2023 में सषक्त महिला कथाकार पद्मश्री

उषाकिरण खान जी की आत्मकथात्मक कृति ‘‘दिनांक के बिना’’ को वेली ऑफ़ वर्ड्स बुक अवार्डस से सम्मानित किया गया है।

प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने में उसके परिवेष की महत्वपूर्ण भूमिका होता है। उसके माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कारों तथा परिवार के बाकी सदस्यों द्वारा दिए गए विचार, परामर्ष, अनुभव आदि मिलकर लेखक के व्यक्ति का निर्माण करते हैं। डॉ0 उषाकिरण खान जी का भी व्यक्तित्व इन्हीं कारणों से निखरा है। उषाजी अपने जीवन काल में काफी उत्कृष्ठ महिला लेखिकाओं में से एक रहीं।

अतः 11 फरवरी 2024 को उनका स्वर्गवास हो गया। वो लाखों लोगों के हृदय की प्रिय तथा प्रेरणा स्त्रोत रहीं। जिनकी ऊष्मा हमेषा एक अद्रिष्य रूप से साहित्य जगत पर पड़ती रहेगी।

कृतित्व:- उषाकिरण खान हिन्दी की ऐसी रचनाकार हैं जिन्हें असंख्य पाठकों का साथ मिला है। इनका साहित्य संसार विपुल वैभव से भरा है। इन्होंने हिन्दी के साथ-साथ मैथिली रचनाएँ भी की हैं। इन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, आलोचना आदि विविध विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई हैं। इनका साहित्य मुख्य रूप से ग्रामीण एवं नारी विषयक परिवेष से जुड़ा हुआ है। उषा जी के कृतित्व पर संक्षेप रूप से आगे चर्च की जाएगी।

उपन्यासकार के रूप में उषा जी:- ‘‘फागुन के बाद (1994) यह इनका पहला उपन्यास है। इसमें मौसम के बदलाव के साथ मानवीय जीवन द्वन्द की बदलते घटनाक्रम की विस्तृत एवं वैचारिक आग्रह के साथ प्रस्तुति हैं। यह उपन्यास की कहानी भारत को आज़ादी मिलने के समय से 1957 तक की स्थितियाँ को दिखाती है। इसमें एक पुरानी लोक-संस्कृति बरकरार है तथा अब एक नई जन-संस्कृति का निर्माण हो रहा है।

दूसरा उपन्यास ‘सीमान्त कथा’ (2000) है। जिसमें 20वीं सदी के उत्तरार्ध में बिहार में फैली जंगलराज की कहानी है। दो स्वप्नदर्षी नवयुवक आतंकवादियों के भेंट चढ़ जाते हैं। लेखिका ने एक सामाधान की कल्पना की है, कि जब तक हम महात्मा गाँधी के सुझाए हुए राहों पर नहीं चलेंगे तब तक ऐसा ही होता रहेगा।

इनका तीसरा उपन्यास है ‘‘ रतनारे नयन’’ (2005) इस उपन्यास में पटना का व्यक्तिकरण हुआ है। पटना जो राजधानी है बिहार की। उसकी ऐतिहासिक, भौगोलिक, राजनीतिक तथा सामाजिक दषा को रात-दिन जागती हुई देखती हैं पटनदेवी माता।

चौथा उपन्यास ‘‘ पानी पर लकीर’’ (2008) जो पंचायती राज होने के बाद महिलाओं की क्या दषा है। इसका विवरण इसमें किया गया है। तब तक महिलाओं को 33% से 50% तक आरक्षण मिल चुका था, परन्तु अधिकांष अषिक्षित महिलाएँ पूर्ण परिणाम नहीं दे पा रही हैं। लकीर तो खींच रही है लेकिन वैसे ही जैसे पानी पर, जो निषान तक नहीं छोड़ती। ऐसी हो सकता है कि कभी ठोस ज़मीन पर स्त्रियाँ लकीर खींचेगी और वह स्थाई होगी।

पाँचवा उपन्यास ‘‘सिरजनहार’’ (2011) जो एक ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास कवि विद्यापति की जीवनी है। विद्यापति श्रृंगारिक कवि के साथ ही साथ भक्त कवि भी हैं।

छठा उपन्यास ‘‘ अगनहिंडोला’’ (2015) यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। जिसका नायक शेरषाह है। यह उपन्यास शेरषाह की जीवनी है। दिल्ली के तख्त पर सिर्फ़ पाँच साल क़ाबिज होने वाले सुलतान ने जितने प्रषासनिक एवं लोकहित के कार्य किये कोई दूसरा सालोंसाल हुकूमत करके भी नहीं कर सकता।

सातवाँ उपन्यास है ‘‘गई झुलनी टुट’’ (2017) इसमें नायिका कमलमुखी के जीवनद्वन्दों को बहुत ही मार्मिक ढ़ग से उठाया गया है। इसमें लेखिका ने एक सीधा-सादा मगर मार्मिक सवाल उठाया है, जीवन केवल संग-साथ नहीं है। संग- साथ है तो वंचना क्यों है? इस उपन्यास में लेखिका ने सामान्य भारतीय परिवेष में एक स्त्री की जीवन दषा का मार्मिक चित्रण किया है। इसमें लेखिका ने कमलमुखी के मन की व्यथा, दुःख, दर्द, अकेलापन आदि का वर्णन हुआ है।

आठवाँ उपन्यास है ‘‘ वातभक्षा’’ (2021) यह आधुनिक विष्वविद्यालय की कहानी है परन्तु कथा बहुत पुरानी है। यहाँ मामला यह है कि स्त्री स्वतंत्र है, समानपूर्वक अपने पैरों पर खड़ी हैं फिर भी वह अहिल्या की तरह पत्थर सी हो गई है।

लेखिका का अंतिम एवं अधूरा उपन्यास है ‘प्रेम प्याला जो पीए’ (अपूर्ण-अधूरा) लेखिका के जितने भी उपन्यास हैं। उनमें मुख्य रूप से नारी विषय को रेखांकित किया गया है। नारी तथा पुरूष समाज के अभिन्न अंग है जिनके बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मनुस्मृति के तृतीया अध्याय का यह ‘श्लोक’ तत्कालीन समाज में स्त्रियों की वास्तविक स्थिति को दर्षाता है –

‘‘ यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता’’

डॉ. उषाकिरण खान अंचल प्रदेष से जुड़ी हुई कथाकार हैं। इनकी कहानियों में मिथिला की लोक-संस्कृति के साथ ही साथ मिथिला की

स्त्रियों के जीवन व्यथा का भी वर्णन किया गया है। इनका मैथिली उपन्यास अनुत्तरित प्रश्न, हसीना मंजिल, दूर्वाक्षत, भामती, पोखरी रजोखरि, मनमोहना रे है। इसमें ''हसीना मंजिल'' पर दूरदर्शन पर सिरियल भी प्रसारित हुआ करता था। इनकी ख्याति का मुख्य आधार मैथिली भाषा का उपन्यास 'भामती' है। जिसमें नवविवाहित भामती अपने पति वाचस्पति मिश्र की प्रसिद्ध का कारण बनती है, अपनी सेवा भाव को समर्पित करके। वाचस्पति मिश्र एक प्रसिद्ध टीकाकार थे। और उन्होंने टीका करने में अपने आप को ऐसा लीन किया कि जब टीका पूरी हुई तो उन्होंने देखा कि सामने एक अधेर उम्र की औरत खड़ी है तो उन्होंने उनसे पूछा- आप कौन है तो उस स्त्री ने कहा- मैं आपकी पत्नी भामती हूँ। यह उपन्यास एक अदभूत सेवा-भाव प्रेम कथा पर आधारित है। इनका एक बाल उपन्यास भी है – लड़ाकू जनमेजय।

कहानीकार के रूप में उषा जी – उषा जी एक मशहुर कहानीकार भी हैं। उनके मुख्य कहानी संग्रह हैं- विवष विक्रमादित्य, दूबधान, गीली पॉक, कासवन, जलधर, जन्म अवधि, घर से घर तक, खेलत गेंद गिरे यमुना में, अड़हुल की वापसी, इनकी कहानी 'दूब- धान' सबसे चर्चित कहानी है। कहानी की पात्र 'केतकी' के सहारे लेखिका ग्रामीण स्मृतियों में रचे बसे दिल टटोलती है। जहाँ एक ओर सामूहिक जीवन-दर्षन के प्रति आस्था है। वही दूसरी ओर गाँव की माटी की सोंधी खुषबू के प्रति लगाव का रेखांकन किया गया है। यह पूरी कहानी घर के भीतर घर की खोज है।

उषा जी की पहली कहानी 1978 में प्रकाषित '' आँखें स्निग्ध तरल और बहुरंगी मन' है। जिसमें आज की समस्याओं का वर्णन हुआ है। '' जलकुंभी'' कहानी की बसुधा और अनुपमा आज की स्त्री की प्रतिनिधि हैं। ''नीलकंठ' की पुनर्कला प्रेम और दाम्पत्य के द्वन्द्व में घिरी है। 'कुमुदिनी' में जीवन के विस्तार में संवेदनाओं, अनुभवों और आत्मीयता के उतार-चढ़ाव सहती हुई एकाकी रह जाती है।

डॉ. उषाकिरण खान ने कुछ हिन्दी संकलन भी लिखें है। जो इस प्रकार हैं-

1. दस प्रतिनिधि कहानियाँ
2. लोक प्रिय कहानियाँ
3. संकलित कहानियाँ
4. संकलन है – मौसम का दर्द।

इसके साथ ही साथ उषा जी ने मैथिली में भी कथा संग्रह लिखा हैः-

1. काँचहि बाँस
2. गोनू झा क्लब

नाटककार के रूप में उषा जी – डॉ. उषाकिरण खान जी मूल रूप लोकधर्मी नाटककार हैं। इनके नाटकों में मूलतः लोक – संस्कृति, लोक चेतना, लोकगीत, लोकव्यवहार, लोक जीवन आदि से गढ़ा हुआ घटना कर्म होता है। जिसके इर्द-गिर्द इन्होंने अपने नाटकों का रूपान्तरण किया है। इनका मुख्य नाटक है – ''कहाँ गये मेरे उगना'' इस नाटक में लौकिक अनुभूतियों के साथ उगना के मन की व्यथा को भी बताया गया है। यह नाटक विद्यापति और मिथिला के केन्द्र में लिखा गया है परन्तु उगना मिथला समाज के जन श्रुतियों का हिस्सा है। इस नाटक में उगना भगवान षिव का ही पर्याय है। उगना को जब डाट-फटकार कर घर से निकाल दिया जाता है। तब उसकी खोज में यह नाटक लिखा गया है।

इनका दूसरा नाटक है – 'हीरा डोम' इस नाटक में भी लेखिका ने स्वभावतः मानवीय संवेदनाओं का वर्णन किया है। उषाकिरण खान जी ने हिन्दी के साथ ही साथ मैथिली नाटकों पर भी लेखनी चलायी है। उनका मिथिला की भूमि से एक अद्भूत जुड़ाव है। जो उनके नाटककार होने के रूप में अच्छी तरह से झलकता है। उनका मुख्य मैथिली नाटक है –

1. फागुन
2. एकसरि ठाढ़
3. मुसकौल बला।

इनके और भी मैथिली बाल नाटक है। जो बच्चों के बाल मनोविज्ञान को अच्छी तरह खोलती है –

1. घंटी से बान्हल राजू
2. बिरड़ा आबिगेल

इनके हिन्दी बाल नाटकों में प्रसिद्ध है:-

1. डैडी बदल गए हैं।
2. नानी की कहानी
3. सात भाई और चंपा
4. चिड़िया चुग गई खेत।

इसमें से 'डैडी बदल गए हैं' मुख्य हिन्दी नाटकों में से एक है। इस नाटक में लेखिका ने बाल जीवन के अनुसुलझे प्रष्नों को उठाया है। एक बालक के बाल मनोविज्ञान का इन्होंने बहुत ही बालपन से वर्णन किया है।

इन सबों के अलाव उषा जी ने और भी रचनाएँ की हैं। जैसे- मैथिली बाल साहित्य के रूप में उन्होंने बाल महाभारत लिखा है। जो काफी प्रसिद्ध हुआ इन्होंने एक हिन्दी कथेतर साहित्य की भी रचना की है – प्रभावतीः एक निष्क्रिय दीप। प्रभावती बिहार के जय प्रकाष नारायण जी की पत्नी थीं। जिन्होंने नारी को समाज में उसके अस्तित्व की स्थापना करने में काफी सहयोग दिया। उषा जी ने अपने एक पुस्तक ''मैं एक बलुआ प्रस्तर खण्ड' में प्रभावती जी के बारे में लिखा है – ''प्रभावती जी के कारण बिहार में महिलाओं में आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता आई। सादगी और सौजन्य की प्रतीक प्रभावती जी नारी – जागरण के कार्यो में अग्रणी महिला थीं। स्वतंत्रता को स्वरोजगार देने के लिए गाँधी जी के कहने के बाद प्रभावती जी ने सन् 1940 में ही गाँधी जी के सुझाव पर डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी की अध्यक्षता में महिला चरखा समिति की स्थापना की। प्रभावती जी स्त्री चेतना की सूत्रधार थीं। वे एक कुषल संगठनकर्त्ता तथा अत्यंत सेवाभावी स्त्री थीं। नारी अस्मिता की उदाहरण प्रभावती जी।''

उषाकिरण खान जी की एक रचना है 'विषतंतु' । इसमें भी उन्होंने महिलाओं की स्थिति को ही दर्षाया है। उषा जी कहती हैं- ''समय पर महिला कभी स्थिर नहीं रहती जैसे 'विषतंतु' कहानी में पत्र सुलोचना कहती है मेरी प्रतिष्ठा दाँव पर है''

आलोचनाकार के रूप में उषा जी

उषाकिरण खान जी ने आलोचना भी लिखी हैं – 1.अरे, यायावर रहेगा यादः अनुभव से अनुभूति तक की यात्रा। यह आलोचना की पुस्तक अज्ञेय जी की जीवन की कथा की पुस्तक है। जिसमें उषाजी ने अनुभवों का बखान किया है।

उषाकिरण खान की जीवन यात्रा पुस्तक के रूप में उनका लिखा हुआ नवीन पुस्तक 'दिनांक के बिना' है। इस पुस्तक में उषा जी के संपूर्ण जीवन की कथा है। इस पुस्तक का शीर्षक 'दिनांक के बिना' इसलिए है क्योंकि उषा जी को घटनाकर्मो का दिनांक (तारिख) याद नहीं था। दिनांक के बिना पुस्तक में इन्होंने अपने बचपन से लेकर के साहित्य सृजन की प्रेरणा एवं शुभारंभ आदि सबों का वर्णन किया है। उषा जी के प्रेरणा स्रोत रहे हैं-बाबा नागार्जुन जिनके कारण ही उषा जी ने साहित्य जगत में कदम रखा और लिखना शुरू किया। यह पुस्तक उषाकिरण खान जी की आत्मकथात्म पुस्तक के रूप में सामने आई है।

उषाकिरण खान के रचनात्मक अवदान का मूल बिन्दु नारी स्वर ही रहा है। उषा जी एक ऐसी कथाकार हैं जिनकी लेखनी में समाज, स्त्री और भूमण्डलीकरण को बार-बार अंकित किया जाता है। इन्होंने नारी की समस्याओं, मान-सम्मान तथा व्याचारिकता आदि को अपनी रचनाधर्मिता में बखूबी स्थान दिया है। लेखिका का मूल योगदान नारी के सम्मान, प्रतिष्ठा से जूड़ा है। इन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों आदि में महिलाओं के स्वर को प्रस्तत किया है। उषा जी कहती हैं-''जिसे पूर्ववैदिक काल अर्थात् ऋवैदिक काल कहा जाता है, में स्त्रियों की स्थिति कैसी थी मैनें विचारा, उस समय से कई बार जैसे-जैसे शासन बदला, धर्म-सम्प्रदाय बने-बिगड़े, स्त्रियों की स्थिति में बदलाव आया। उस बदलाव को रेखांकित करते हुए मैनें पाया कि एक वलय बना जो इक्कीसवीं सदी में पुनः अपने प्रस्थान बिन्दु पर ही पहुँच गया है। इन परिघटनाओं का आलम्बन है मौर्यकालीन अद्वितीय प्रस्तर प्रतिमा दीदारगंज की यक्षी। सो मैनें स्त्री विमर्श की किताब लिखी-'मैं एक बलुआ प्रस्तर खण्ड'। यह कई स्त्रियों की जीवनी है।'' जिसमें परम विदुवी घोषा से इंदिरा गाँधी तक का स्त्री-विमर्श अंकित है।

उषा जी ने इसी पुस्तक में स्त्रियों के विषय में बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या या यूँ कहे कि सवाल उठाया है वे लिखती हैं-''स्त्री, जो माँ है, जिसका एक युग रहा है, जिसे जगदम्बा समझा गया, उसे दीवार के अंदर बंद कर अधिक नहीं रखा जा सकता है। सन्तानोत्पति, गृहषोभा तथा संचालनकर्ता वह है तब उसे एक सीमा से अधिक तुच्छ नहीं समझा जा सकता। उनकी संवेदना भाँप कर उन्हें महिमामंडित करने की भावना का उद्भव हुआ, तभी लिखा गया 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' पति के लिए, पुत्र के लिए, गृहस्थी के लिए, पषुधन के लिए पतव-त्योहारों का नियमन हुआ जैसे-जैसे वर्ग और वर्ण विभाजन हुआ वैसे-वैसे स्त्रियों का रूप बदलने लगा।''

लेखिका ने स्त्री की प्रगति के लिए विभिन्न आयाम बनाए हैं जैसे-

1. स्त्री-शिक्षा
2. स्त्री का स्वतन्त्र अस्तित्वःसामाजिक मान
3. स्त्री अधिकारों के प्रति जागरूकता आदि।

इनका 'आयाम' नामक संस्था (पटना, बिहार) जो स्त्री का स्वर है ऐसे ही महत्वपूर्ण बिन्दु से रेखांकित है। उषा जी ने अपनी स्त्री-विमर्ष की पुस्तक 'मैं एक बलुआ प्रस्तर खण्ड' मैं नारी-शोषण या बलात्कृत नारियों के आत्मबल, आत्मविश्वास जो जगाने के लिए शास्त्र सम्मत ज्ञान की बातें कहीं हैं-

''इसी प्रकार स्त्री की पवित्रता के संबंध में षास्त्रकारों का मत है कि ऋतुमती होते ही वह पुनः पवित्र हो जाती है- व्यास ने कहा है।

व्यभिचारेण दुष्टानामं पतिनां दर्षनादृते
धिकृत्याम वाच्यामन्यंत्र वासयेत पतिः
पुनस्तामार्त्रवस्नायां पूर्ववद् व्यवहारयेत्।

व्यास कहते हैं कि स्त्री किसी के साथ सम्भोग करे तो अगली बार रजस्वला होने तक ही अपवित्र है। उसके बाद वह अपने पुरूष के लिए स्वीकार्य है। गौतम का स्वयं का जीवन उदाहरण है। अहल्या के त्याग देने के बाद उन्होनें पुनः सहजीवन जीया, सन्तान उत्पन्न की।''

इस प्रकार उषाकिरण खान का हिन्दी साहित जगत में नारी स्वर को लेकर बहुत महत्वपूर्व अवदान रहा है।

निष्कर्ष:- डॉ. उषाकिरण खान जी के अन्तर्बाहय व्यक्तितव तथा कृतित्व के विवेचना और विश्लेशण के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे इस प्रकार है:- हिन्दी साहित्य की प्रख्यात महिला साहित्यकारों में से एक हैं। उषाकिरण जी जिन्हे साहित्य जगत में अपनी ऊष्मा के कारण सदैव याद किया जाता रहेगा।आज भी याद की जाती हैं। यह मूल रूप से नारी चेतना की लेखिका हैं। इन्होंने नारी जीवन की व्यथा, दषा तथा समस्याओं को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। यह ग्रामीण परिवेष से जुड़ी हुई कथाकार हैं। यही कारण है कि इनके रचनाओं के पात्र हमें किसी भी गाँव में मिल जाते हैं इन्होंने परिवारिक समस्या, स्त्री-पुरूष संबंध आज के दौड़ में नारी जीवनयापन की समस्या अकेलापन आदि को बखूबी उकेरा है। उषाकिरण खान जी का कथा साहित्य सामाजिक चेतना व संवेदना से संबंधित है। कई रचनाओं में आधुनिक समाज है, तो कहीं ऐतिहासिक तथा आदिकालिन समाज में मानवीय संवेदना की कथा का रूपान्तरण किया है इन्होंने उषा जी ने नारी को ईष्वर की अद्भुत रचना माना है, उसका अपमान ईष्वर का अपमान मानती हैं। इन्होंने नारी को अपमानित शोषित और वंचित करने एवं परिस्थितियों को सफलतापूर्वक अपनी रचनाओं में उजागर किया है। उषा किरण खान जी का मानना है कि नारी जब आत्मनिर्भर होगी तभी वह अपने अस्तित्व को पहचान पयेगी।

संदर्भ सूची:-

1. डॉ. उषाकिरण खान, पेपर बैक प्रथम संस्करण 2022, 'दिनांक के बिना', वाणी प्रकाष न, नई दिल्ली, पृ0 सं0-10
2. वही, पृ0 -11
3. वही, पृ0 -12
4. वही, पृ0 -63
5. मनु महाराज, 'मनुस्मृति', तृतीय अध्याय, ष्लोक सं0-56
6. डॉ. उषाकिरण खान, प्रथम संस्करण 2021, 'मैं एक बलुआ प्रस्तर खण्ड', राजपाल एण्ड सन्ज्, नई दिल्ली, पृ0-93
7. डॉ. उषाकिरण खान, प्रथम संस्करण 2015, 'विषतंतु', प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली, पृ0-14
8. डॉ. उषाकिरण खान, पेपरबैक प्रथम संस्करण 2020, 'दिनांक के बिना', वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली, पृ0-175
9. डॉ. उषाकिरण खान, पहला संस्करण 2021, 'मैं एक बलुआ प्रस्तर खण्ड', राजपाल एण्ड सन्ज, नई दिल्ली, पृ0-76
10. वही, पृ0-8

.....